ISSN 2394-5303

PRINTING® area

Issue-59, Vol-01 November 2019
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27) मावची जमातीचे लोकसाहित्य — क्षेत्रीय अभ्यास
प्रा. डॉ. राजेंद्र वडमारे, जि. अहमदनगर ||127

28) सूफी संत बुल्लेशाह के काव्य में सामाजिक विद्रोह
डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे, जि.नांदेड ||137

29) लोक विश्वास ते अंधविश्वास जनेही परम्परां दा खंडण करदी शकुंत दीपमाला हुंदी ...
भूपिन्दर सिंह, जम्मू ||140

30) महिला और मानवाधिकार
प्रा. डॉ. अंजली चौधरी, नांदेड ||142

31) किशोर विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन
श्रीमती प्रतिभा द्विवेदी ||145

32) न्यून साक्षरता के कारणों का सर्वेक्षण एवं उपचारात्मक कार्य योजना निर्माण
Prof. Rajni Sharma & Dr. Buddhi Prakash Goswami ||147

33) कहानी संग्रह 'खी'दल' ते 'अदृष्य महाटै' दियें कहानियें च चित्रित नारी शोषन दी ...
ज्योति थाप्पा, जम्मू ||152

34) भारत का गिरता आर्थिक विकास दर बनाम मंदी (छ.ग. का तुलनात्मक अध्ययन)
डॉ. (श्रीमती) अनीता मेश्राम, जिला—दुर्ग (छ.ग.) ||155

35) उत्तर अम्बेडकर दलित चिन्तन के संदर्भ में हिन्दी दलित आत्मकथाओं का अध्ययन
राकेश प्रसाद, प्रयागराज ||159

36) तुकाराम और रामदास की सामाजिक भूमिका
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, जि.नांदेड ||161

37) संगीत एवं धर्म परस्पर संबंध
डॉ. मनीषा (दीक्षित) शर्मा, सूरत, गुजरात ||163

38) अनुवादित आत्मकथा 'आयदान' में दलित नारी
डॉ. रजनी शिखरे, जि. बीड ||166

39) प्रभा खेतान के कथा साहत्य में स्त्री चेतना का परिप्रेक्ष्य
भूपेन्द्र प्रताप, प्रयागराज ||168

Scanned with CamScanner

38

अनुवादित आत्मकथा 'आयदान' में दलित नारी

डॉ. रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
आर.बी.अटल महाविद्यालय गेवराई, जि. बीड

इक्कीसवीं शताब्दी का दलित साहित्य दलित चेतना का पक्षधर रहा है। दलित साहित्य आज के दलितों मन का आलेख, दस्तावेज एवं प्रतीक बना है। आज दलितो में शिक्षा प्रसार के कारण चेतना और आत्मसम्मान की भावना जागृत हो रही है। आज जातियता की भावना कम होती हुई दिखाई दे रही है, पर पूरी तरह समाप्त नही हुई है। कहीं—कहीं जातियता की भावना का उद्रेक होता है। भारतीय समाज में अस्पृश्यता, जातियता और सामाजिक भेदभाव रहा है। दलित साहित्य के माध्यम से दलितों मे चेतना जागृत होती हुई दिखाई देती है।

दलित साहित्य में 'आत्मकथा' का अपना विशेष महत्व है। सन १९६० के बाद दलित आत्मकथा सशक्त रुप में लिखी गयी। जो विश्वसाहित्य में अपना खास महत्व रखती हैं। आज का युग अनुवाद का युग है। प्रत्येक भाषा की महत्वपूर्ण कृति का अनुवाद दूसरी भाषाओ में होता है। हिंदी भाषा मे मराठी की कई सशक्त दलित आत्मकथाओं का अनुवाद हुआ है। जिसमें 'आयदान' चर्चित आत्मकथा है। जिसका अनुवाद माधवी देशपांडे ने किया। जो वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से २०१० में प्रकाशित हूआ है।

दलित आत्मकथाओं की श्रंखला मे अर्मिला पवार की 'आयदान' मील का पत्थर मानी जाती है। इसमें लेखिका ने अपने पाँच दशक की जीवनयात्रा का लेखा—जोखा स्पष्ट किया है। सामाजिक स्थिति, दलितपन, और संघर्ष से लेखिका का व्यक्तिमत्व निखरा है। दलित स्त्री होने की पीडा के कारण लेखिका को अपने जीवन में उपेक्षा और विषमता के कटु अनुभवों का सामना करना पडा। प्रस्तुत रचना में इन्हीं अनुभवों को लेखिका ने 'आयदान' के रुप में बुनने का प्रयास किया है।

'आयदान' यह आत्मकथा सिर्फ लेखिका के जीवन को ही चित्रित नहीं करती तो संपूर्ण दलित जाति या दलित जीवन का चित्र समाज के सम्मुख रखती है। भारतीय समाज ने सदियों से दलितों पर अन्याय और अत्याचार किये। उन्हे विकास से कोसो दूर रखा। इसी कारण दलितों को जानवरों की तरह जीवन जीना पडा। संपूर्ण दलित समाज सवर्णों पर निर्भर दिखाई देता है। आज कुछ मात्रा में इन स्थितियों मे परिवर्तन देखने को मिलता है, पर अभी भी इन स्थितियों में पूरी तरह से परिवर्तन नहीं आया है। इस संदर्भ में अर्मिला पवार लिखती है कि, 'जातिभेद का उग्र रुप अब प्राय: दिखाई नही देता। फिर भी जैसे किसी जंगल में खूँखार जानवरों की संख्या घटते—घटते ऑखों से ओझल हो जाये उसी तरह जाति भी उपरी सतह पर भले ही दृष्टिगोचर न हो, परंतु कहीं किसी झाड़ी के पीछे आज भी झपटने को तैयार किरण साधकर बैठी है। तेज गति वाहन में चलने वालों को भले ही उनकी खूँखार ऑखें दिखाई न दे, पैदल चलने वालों को वे निश्चित ही दिखाई देती है और दिल दहला देती है।"

अर्मिला पवार जी ने 'आयदान' में नारी जीवन की त्रासदी को स्पष्ट किया है। पुरुष प्रधान संस्कृति में सदियों से नारी पर अन्याय और अत्याचार होता आया है। पत्नी यदि पति से अधिक पढी लिखी होती है तो पति के अहंकार को ठेस पहुँच जाती है। हरिश्चंद्र जो लेखिका के पति है। लेखिका जब बी.ए. की उपाधि प्राप्त करती है तो आनंदित होते है, पर जब वह एम. ए. में प्रवेश लेना चाहती है तो उन्हे बुरा लगता है, क्योंकि उनकी पढाई बी.ए. तक ही हुई है। पुरुष प्रधान संस्कृति की इस दोहरी मानसिकता का परिचय देते हुए लेखिका लिखती है कि "मि.पवार का मेरे साथ दोहरा बरताव रहा है। एक ओर पत्नी लिखती

Scanned with CamScanner

बोलती है इसका उन्हें आनंद होता है तो दूसरी ओर दुःख भी होता है। लेखिका को उसके पति हरिश्चंद्र अपनी घर गृहस्थी की ओर ध्यान देने के संदर्भ में कहते है कि "क्या करोगी अब एम.ए. कर के अब घर में बच्चों की ओर ध्यान दो, उन्हें पढाओ।"[1] इस विचार में पुरुषी मानसिकता की बू आती है। लेखिका ने यहाँ पति द्वारा पत्नी की प्रगति के मार्ग में बाधा बनने की पुरुषी मानसिकता का परिचय दिया है।

'आयदान' में दलित स्त्री संघर्ष कर अपनी घर गृहस्थी चलाती है। पुरुषों से ज्यादा मेहनत करती है फिर भी शराबी पति द्वारा उसे नरक यातनाएँ भुगतनी पडती है। उद्विग्न होकर अपने मन की व्यथा को बयान करती हुई वह कहती है कि, "कीड़े पड़े उस हरामी के, हाथ झड जाये।"[2] जैसे वाक्यों का प्रयोग कर मारपीट के कारणों को बताती है। स्त्री को सास के द्वारा अन्याय और अत्याचार सहना पडता है। सास अपनी बहू के लिए, "गंड अपनी गांड का पानी तक नहीं देगी।"[3] जैसे वाक्यो का प्रयोग कर अपमानित करती थी। दलित स्त्री अज्ञानी होने के कारण डॉक्टर पर विश्वास न कर ओझा ने दी हुई दवा एवं विभूति पर विश्वास करती है। लेखिका इस संदर्भ मे लिखती है कि, "बच्चा बुखार से तप रहा है, इसे समय पर दवा देती रहना हाँकू और तकिये के नीचे विभूति भी रखी है, वह भी उसके माथे पर टेक देना।"[4] इस प्रकार अनपढ दलित स्त्री जीवन की व्यथा—कथा को उर्मिला पवार जी ने 'आत्मदान' के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

समाज सिर्फ अनपढ स्त्री पर ही अत्याचार करता है ऐसा नहीं तो पढी लिखी स्त्री को भी अत्याचार का सामना करना पडता है। स्वयं इस व्यथा, वेदना को उर्मिला पवार ने सहा है। मैत्रिण ग्रुप के संपर्क मे आने के कारण लेखिका की सामाजिक प्रगल्भता का विकास होता गया। स्त्री अस्मिता और अस्तित्व की मौलिक दृष्टि से आत्मकथा में लेखिका के द्वारा नई दृष्टि डाली गई है। इस संदर्भ मे वे लिखती है कि, "एक ओर स्त्री भी पुरुषों की तरह एक व्यक्ति है। पुरुषों को मिलने वाले सभी अधिकार उसे मिलने चाहिए। पुरुषों की ओर मसल पॉवर है तो स्त्री की ओर जननशक्ति। दोनों अलग अलग शक्ति है। उनका एक साथ मूल्यमापन न करते हुए अलग अलग मूल्यमापन होना चाहिए।"[5] इस तरह लेखिका नारी के श्रेष्ठत्व को अधोरेखित करती है।

उर्मिला पवार आंबेडकरी आंदोलन, दलित साहित्य, स्त्री आंदोलन, स्त्री साहित्य आदि का बारीकी से अध्ययन करती है। झोपडपट्टी के नारकीय जीवन को वयस्थों की तरह न देखते हुए स्वयं अनुभव करती है। दलित स्त्रियों के प्रश्नों को समाज के सम्मुख लाने की लेखिका की भूमिका किताबी न होकर अनुभव की आँच में तपकर निखरी है।

निष्कर्ष :

अतः हम कह सकते है कि 'आयदान' यह इक्कीसवीं शताब्दी की दलित स्त्री की समस्याओं को उजागर करनेवाली एक सशक्त आत्मकथा है। स्त्री सदियों से पुरुषप्रधान व्यवस्था के दोहरी मानदंडो को झेलती आयी है। पुरुषप्रधान व्यवस्था इन्हीं मानदंडो के सहारे स्त्री के साथ खिलवाड करती आयी है। दलित स्त्री की इन दयनीय स्थितियों में परिवर्तन के लिए उर्मिला पवार अपनी आत्मकथा 'आयदान' के माध्यम से आवाज उठाती है।

संदर्भ:

१. उर्मिला पवार — आयदान (आत्मभान से) पृ.१०
२. उर्मिला पवार — आयदान पृ.१८४
३. उर्मिला पवार — आयदान पृ.१९
४. उर्मिला पवार — आयदान पृ.१९
५. उर्मिला पवार — आयदान पृ.१८
६. उर्मिला पवार — आयदान (मराठी मुलकृति —आत्मभान) पृ.२०९

❑❑❑

Scanned with CamScanner